रविवासरीय
हिन्दुस्तान
तरक्की को चाहिए नया नजरिया
रविवार, 29 अक्तूबर 2017, बरेली, पांच प्रदेश, 20 संस्करण, नगर

### एसआरएमएस में अंतर्राष्ट्रीय कांफ्रेंस में डॉक्टरों ने किया आगाह, बीएचयू जनरल मेडिसिन विभाग के हेड का डेंगू पर व्याख्यान

# दिल की बीमारी में डेंगू हो तो भूलकर न खाएं एस्प्रिन

स्वास्थ्य

बरेली | प्रमुख संवाददाता

दिल के मरीज डेंगू की चपेट में आ जाएं तो उनको तत्काल एंटी प्लेटलेट्स ड्रग एस्प्रिन बंद कर देनी चाहिए। ऐसा न करने पर स्थिति गंभीर हो सकती है। शरीर से ब्लीडिंग होने का खतरा बढ़ने से जान भी जा सकती है। एसआरएमएस में आयोजित अंतर्राष्ट्रीय कांफ्रेंस के दूसरे दिन बीएचयू के जनरल मेडिसिन विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. कैलाश कुमार गुप्ता ने डेंगू की बीमारी, निदान और बचाव के बारे बताया। साथ ही डेंगू के कई मिथकों को भी दूर किया।

एसआरएमएस इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंस के तीन दिवसीय तीन दिवसीय अन्तर्राष्ट्रीय कान्फ्रेंस 'एपीकॉन 2017 एवं मेडिसिन अपडेट' के दूसरे दिन डॉ. गुप्ता ने डेंगू के खतरे से आगाह किया। साथ ही कहा कि डेंगू को लेकर कई मिथक भी है जिन्हें समझने की जरूरत है। उन्होंने कहा कि हृदयरोगियों को रक्त पतला करने के लिए एस्प्रिन दी जाती है। ऐसे में हृदयरोगी डेंगू की वजह से अस्पताल में भर्ती हो तो डॉक्टर को एस्प्रिन के बारे में जरूर बताएं और तत्काल बंद कर दें। इसे तब तक न लें जब तक स्थिति सामान्य न हो जाए या फिर चिकित्सक की सलाह लें।

उन्होंने बताया कि सभी को भर्ती करने की जरूरत नहीं है। हृदयरोगियों, हायपरटेंशन, गर्भवती महिला, मधुमेह रोगियों के अलावा उल्टी, पेट दर्द और ब्लीडिंग के मामलों में ही भर्ती करने की सलाह दी जाती है। 48 घंटे तक निगरानी में प्लेटलेट्स स्थिर है या धीरे-धीरे वृद्धि होने, बुखार न आने पर मरीज को डिस्चार्ज किया जा सकता है।

**चार प्रकार के हो सकते हैं डेंगू वायरस :** डॉ. गुप्ता ने बताया कि डेंगू वायरस चार प्रकार को होता है। हर बाल अलग वायरस हमला करता है। ऐसे में यह मानना कि एक बार डेंगू हो गया तो दोबारा नहीं होगा यह मिथक है। यह और गंभीर हो सकता है।

**10 हजार पहुंचे काउंट तो प्लेलेट्स चढ़ाना जरूरी:** डॉ. गुप्ता ने ने कहा कि प्लेटलेट्स चढ़ाने का निर्णय डॉक्टर को करना होता है न कि मरीज या तीमारदारों को। 10 हजार तक काउंट पहुंच गया तो प्लेटलेट्स चढ़ाना अनिवार्य है भले ही काउंट बढ़ रहा हो या नहीं।

**कुपोषित बच्चों को डेंगू का खतरा कमः** डॉ. गुप्ता ने कहा कि यह मिथक है कि कुपोषित बच्चों को डेंगू का खतरा ज्यादा होता है। ऐसा नहीं है, स्वस्थ बच्चे डेंगू की चपेट में ज्यादा आते हैं।

प्रो. केके गुप्ता, बीएचयू।

एसआरएमएस में चल रहे अंतर्राष्ट्रीय कांफ्रेंस के दूसरे दिन शनिवार को एक सोविनियर का विमोचन किया गया।

# जोड़ों की बीमारियों का समय पर कराएं निदान

बरेली | प्रमुख संवाददाता

एसआरएमएस इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज में शुरू हुई अंतर्राष्ट्रीय कांफ्रेंस का औपचारिक शुभारंभ चेयरमैन देवमूर्ति ने किया। इस अंतर्राष्ट्रीय कांफ्रेंस में देश व विदेश से आए डॉक्टरों ने विभिन्न बीमारियों के निदान व इलाज की की नई तकनीकों से छात्रों व डॉक्टरों को अवगत कराया। साथ ही विभिन्न मेडिकल कॉलेजों ने आये अपने-अपने पोस्टर लगाकर अपनी प्रस्तुति दी। इस अवसर पर लगभग 50 से अधिक प्रोस्टरों का प्रदर्शन किया गया। इस अवसर पर एक सोविनियर का भी विमोचन किया गया।

मेडिसिन अपडेट व एपीकॉन 2017 थीम पर आयोजित कांफ्रेंस में फोर्टिस अस्पताल नई दिल्ली से आये डॉ. विमलेश पाण्डे ने संधिवात जैसी गम्भीर बीमारी के बारे में बताते हुए जानकारी दी। कहा कि जोड़ों की इतनी पीड़ादायक बीमारी है कि इसमें रोगी के प्रत्येक जोड़, खासकर छोटे जोड़ों में अत्यन्त दर्द होता है और सूजन आती है। उन्होंने कहा कि इस बीमारी को जल्दी ही पहचान लिया जाये तो समय पर उचित इलाज करने से बीमारी काफी हद तक नियंत्रित हो जाती है और इससे होने वाली जोड़ी की विकृति से मरीज का बचाव हो जाता है। केजीएमयू के डॉ. राजीव गर्ग सांस के मरीजों में और ओब्सट्रेक्टिस सीप एप्निया में नान इनवेजिव वैन्टीलेशन के प्रयोग के बारे में विस्तार पूर्वक बताया। इलाहाबाद मेडिकल कॉलेज में डायरेक्टर एंड हेड मेडिसिन विभाग डॉ. सरिता बजाज ने नान एल्कोहलिक फैटी लीवर डिजीज (एनएएफएलडी) के बारे में बताया। कहा कि कि इस बीमारी के दो मुख्य कारण मोटापा और डायबिटीज हैं। कान्फ्रेंस के अन्त में डॉ. एसएन गुप्ता एवार्ड के अन्तर्गत विभिन्न संस्थानों के पीजी चिकित्सकों ने गेस्ट्रोएन्ट्रोलाजी में प्लेटफार्म प्रजेन्टेशन दिये।

मेडिकल डायरेक्टर डॉ. निर्मल यादव स्वागत एवं अभिनन्दन किया। एपिकान की अध्यक्षा डॉ. सरिता बजाज ने धन्यवाद ज्ञापित किया। आयोजक सचिव डॉ. स्मिता गुप्ता, ट्रस्ट सचिव आदित्य मूर्ति मौजूद रहे।

**आयोजन**

- बीमारियों के निदान व उपचार पर एसआरएमएस में हुआ मंथन
- कांफ्रेंस के दूसरे दिन इलाज की नई तकनीकों पर की गई चर्चा